



**Chudamani Sunderkand
Parivaar, Himatnagar**

श्री अजरंग भाषा

श्री अजरंग भाग

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करै सनमान ।
तेहि के डारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी, सुन लीजे प्रभु अरज हमारी
जन के काज बिलम्ब न कीजे, आतुर दौरे महा सुभ दीजे ॥
जेसे कुटी सिन्धु के पारा । सुरसा बदन पैहि बिस्तारा ॥
आगे आय लंकिनी रोका । मारे हु लात गध सुरलोका ॥
जाय विभीषन को सुभ दीन्हा । सीता निरभि परम पद लीन्हा ॥
भाग उजारि सिन्धु महँ बोरा । अति आतुर जम कारे तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा । लुम लपेटि लंका को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गध । जय जय धुनि सुरपुर नभ भध ॥
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अन्तरजामी ॥
जय जय लजन प्राण के दाता । आतुर होध दुःख करहु निपाता ॥
जय हनुमान जयति सुभसागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले । बैरिहिं मारु ब्रज की कीले ॥
गदा बज्र ले बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उगारो ॥
ॐकार हुँकार प्रभु धावो । बज्र गदा हनु बिलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा । ॐ हुं हुं हनु अरि उर सीसा ॥
सत्य होहु हरि सपथ पाय के । रामदूत धरु मारु धाय के ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा । दुख पापत जन केहि अपराधा ॥
पूजा नप तप नेम अयारा । नहिं जानत है कछु दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पाय पैरों कर जोरि मनावो । यहि अवसर अब केहि गोहराबो ॥
जय अंजनिकुमार बलवन्ता । शंकर सुपर्न पीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल धालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिसाय निसायर । अग्नि बैताल काल मारी भर ॥
धन्हे मारु ताहि सपथ राम की । रामु निज मरजादा नाम की ॥
जनकसुता हरिदास कहावो । ताकि सपथ बिलम्ब न लावो ॥
जय जय जय धुनि होत अकासा । सुभिरत होत दुसह दुःख नासा ॥
उहु उहु अलु तोहि राम दोहाध । पांथ परौ कर जोरी मनाध ॥
ॐ यं यं यं यपल चलन्ता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥

श्रीरामचरितमानस

ॐ हं हांक हेत कपि यंचल । ॐ सं संहमि पराने जलदल ॥
 अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनंद हमारे ॥
 ताते बिनती करौ पुकारी । करहु सकल दुःख निपति हमारी ॥
 ऐसे जल प्रलाप प्रभु तोरा । कस न करहु दुःख संकट मोरा ॥
 हे बजरंग! जाए-सम धायो । भेटि सकल दुःख दरस टिजायो ॥
 हे कपिराज काज अब अहे । अपसर चुकि अहं पछते हे ॥
 जनु की लाज जात अहि जारा । धायहु हे कपि पवन कुमारा ॥
 जयति जयति जे जे हनुमाना । जयति जयति गुन ज्ञाना निधाना ॥
 जयति जयति जे जे कपिराज । जयति जयति जे जे सुभदायी ॥
 जयति जयति जे जे रामपियारे । जयति जयति जे रामदुलारे ॥
 जयति जयति मुद-मंगल दाता । जयति जयति त्रिभुवन विध्याता ॥
 यहि प्रकार गावन गुन शेषा । पावन पार नहि लपलेसा ॥
 राम रुप सर्वत्र समाना । देहत रहत सदा हर्षाना ॥
 विधि शारदा सहित दिन राती । गावत कपि के गुन बहु भांती ॥
 तुम सम नही जगत जलपाना । करि विचार देजउ विधि नाना ॥
 यह जिन जानि सराए तप आर्य । ताते विनय करौ यित लाय ॥
 सुनि कपि आरत जयन हमारे । भेटहु सकल दुःख क्षम भारे ॥
 अहि प्रकार बिनती कपि केरी । जो जन करै लहे सुख ढेरी ॥
 याके पढत पीर हनुमाना । धायत जाए तुल्य जलपाना ॥
 भेटत आये दुःख छीन माहीं । हे दर्शन रघुपति ढीग जहीं ॥
 पाठ करे बजरंग जाए की । हनुमंत रक्षा करे प्राण की ॥
 डीठ मूठ टोनाटिक नासे । पर कृत यंत्र मंत्र नहि त्रासे ॥
 भैरवादि सुर करौ मिताय । आयसु मानी करौ सेपकाय ॥
 प्राण करी पाठ करै मन लाय । अल्प मृत्यु ग्रह दोष नसाय ॥
 आपत ग्यारह दिन प्रतिजापे । ताकी छांह हाल नाहिं व्यापे ॥
 यह बजरंग जाए जेहि मारे । नाहि कहो झीर केन उबारे ॥
 पाठ करे बजरंग जाए की । हनुमंत रक्षा करे प्राण की ॥
 यह बजरंग जाए जो जापे । ताते भूत प्रेम सब कापे ॥
 धूप दैय अरु जपे हमेसा । ताके तन नहि रहे कलेसा ॥

उर प्रतिति दढ सरन है, पाठ करै धरि ध्यान ।

बाधा सब हर करै, सब काम सफल हनुमान ॥